



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 30 ]

नई दिल्ली, सोमवार, जनवरी 29, 1996/माघ 9, 1917

No. 30]

NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 29, 1996/MAGHA 9, 1917

राष्ट्रपति सचिवालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 जनवरी, 1996

सं० 9-प्रेज/96.—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्ति को उनकी अति असाधारण वीरता के लिए “अशोक चक्र” प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

कैप्टन अरुण सिंह जसरोटिया (आई सी-48171), मेना मेडल

9 स्पेशल फोर्सेज रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 सितम्बर, 1995)

कैप्टन अरुण सिंह जसरोटिया की कमान में 15 सितम्बर, 1995 को जम्मू और कश्मीर की लोलाब घाटी में 9 स्पेशल फोर्सेज का आतंकवाद उन्मूलन विशेष दल 3 हजार मीटर की उंचाई पर ऐसी जगह पहुंचा जहां कुछ विदेशी भाड़े के आतंकवादियों के छिपे होने का संदेह था। दस घंटे की थकानदेह चढ़ाई, चट्टानी कगार और भीषण खतरों का सामना करते हुए 9 स्पेशल फोर्सेज का सैन्य दल खोटी पर पहुंचने ही वाला था कि उन पर राकेट और राइफलों से भयंकर गोला-बारी हुई। कैप्टन जसरोटिया ने जवाबी फायर किया। स्थिति का मूल्यांकन करते ही उन्होंने अपने जवानों को अत्यन्त खतरनाक स्थिति में पाया, जहां से उनके जवान मोर्चों में बखूबी सुरक्षित विदेशी आतंकवादियों का मुंहतोड़ जबाब देने में असमर्थ थे। वीर अरुण सिंह अत्यंत निर्भीकता और फुर्ती से हथगोला फेंकते हुए आगे झपट पड़े। एकाएक एक गोली उनके कंधे में आ लगी। कैप्टन अरुण सिंह गोली चलाने वाले आतंकवादी से भिड़ गए और गुत्थमगुत्था की लड़ाई में अपनी गोली से उसे वहीं मार गिराया। आगे बढ़ते हुए शूरवीर अरुण सिंह वहीं एक गुफा के मुहाने तक पहुंचे ही थे कि एक अन्य आतंकवादी ने पीछे से वार करते हुए उन्हें दबोच लिया। कैप्टन अरुण सिंह ने तत्काल पेंतरा बदल कर आतंकवादी को धर पटका और अपने कमांडो चाकू से उसे मौत के घाट उतार दिया।

अपने जवानों का जीवन बचाने के लिए उन्होंने अपने जीवन की रंचमात्र भी चिंता न करते हुए लहलुहान हो जाने पर भी उस गुफा में हथगोले फेंकते हुए गोलियां बरसाते हुए तूफान के समान प्रवेश किया और अपने प्रहार से बाकी बचे दुर्दान्त सशस्त्र विदेशी आतंकवादियों का काम तमाम कर दिया। इस बीच एक गोली उनके सीने को भींथते हुए निकल गई। अंततः पराक्रमी अरुण सिंह ने वीरगति पाई।

गिरीश प्रधान, निदेशक

## PRESIDENT'S SECRETARIAT

## NOTIFICATION

New Delhi, the 25th January, 1996

**No. 9-Pres/96.**—The President is pleased to approve the award of 'Ashoka Chakra' for most conspicuous bravery to:—

CAPTAIN ARUN SINGH JASROTIA (IC-48171), SM

9 SPECIAL FORCES REGIMENT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: 14th September, 1995)

A team of 9 Special Forces Regiment under the leadership of Captain Arun Singh Jasrotia was carrying out counter-insurgency operations in Lolab Valley of Jammu and Kashmir. On 15th September 1995, after an arduous climb of nearly ten hours, the team reached the general area at a height of approximately 3000 meters, where some foreign mercenaries were suspected to be hiding. The team drew heavy rocket and gun fire. Captain Arun Singh Jasrotia, realising the extreme danger to his men, who could not engage the well entrenched terrorists from the position they were in, in a daring move, rushed forward lobbing a grenade. While doing so, he was hit in the shoulder. Despite being grievously injured, he shot dead the terrorist who had fired at him after a hand to hand fight. Continuing his advance, he came near the mouth of the cave when he was pounced upon by another terrorist. The young officer grappled with this terrorist and killed him with his commando knife.

Staking his life for the safety of his comrades and bleeding profusely, Captain Arun Singh Jasrotia refused to move back and in a final bid stormed the cave spraying bullets and lobbing grenades. He eliminated the remaining heavily armed foreign terrorist in the cave but was struck fatally by a bullet in the chest in the process. He finally collapsed due to loss of blood and made the supreme sacrifice.

G. B. PRADHAN, Director